भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-3, अंक-1	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-20.00
शुक्रवार, 12 जन' 79	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे-श्री विमल दवे	प्रति अंक : 2.00

3 फरवरी स्वरूपानुभूतिदिन.....

'प.पू. काका' (श्री दादुभाई पटेल) के नाम से और उनके करुणामय, प्रभुतापूर्ण व्यक्तित्व से 'योगी डिवाईन सोसाईटी' द्वारा प्रकाशित इस मासिक पत्रिका के पाठक सुपरिचित है। उनके यह असाधारण दिव्य व्यक्तित्व के मूल में कौन सी अनुभूति है, यह अनुभूति किस स्तर की है, किस प्रकार की है और कैसी है इसकी जानकारी के लिये अनेक पाठक उत्सुक थे। अतः यहां उसका सांगोपांग वर्णन दिया है। यह एक योगानुयोग है की इस अंक की समयावधि में वह मांगल्यपूर्ण दिन 3 फरवरी आता है जिस दिन प.पू. काका को गुरुहरि योगीजी महाराज ने साक्षात्कार करवाया था-प्रभु के भव्यरूप की अनुभूति करवाई थी।

भगवत्तत्व के अनुभव अनेक श्रेयार्थियों को पूर्व में भी हुए है। उदाहरणार्थ नरसिंह महेता, मीरा, चैतन्य महाप्रभु आदि। स्वामिनारायण सम्प्रदाय में भी प.पू. सच्चिदानंदस्वामी और पू. स्वरूपानंदस्वामी को महाराज का दर्शन था ही, किन्तु आज से 26 साल पूर्व पू. 'काका' को जो साक्षात्कार हुआ यह ब्रह्मस्वरुपी सिद्धदशा का और सत्य ज्ञानसमाधि का अनुपम और नित्य साक्षात्कार था, है। इन्द्रियाँ और अन्तःकरण का प्रवाह अखंड प्रभुमय हो अथवा आत्मा को परमात्मा का सम्बन्ध अखंड हो ऐसा यह एक शुद्ध ब्राह्मीस्थिति का दर्शन था और है। उस दिन एक दिव्यज्योति से दूसरी दिव्यज्योति का प्रागट्य हुआ और तब से वह दिव्यज्योति अनेकों को दिव्य प्रेरणा दे रही है। और आज हम देखते हैं की 'काका' अर्थात् दया का सागर। समुद्र का जल सूख सकता है किन्तु पू. काका का निर्मल प्रेमप्रवाह अखंड और अजस्र है। परमात्मा हमें सद्बुद्धि दें कि हम इस प्रवाह में मग्न होकर आनन्दानुभूति करें।

कोटि वन्दन हो महाप्रभु स्वामिनारायण को कि उन्होंने सामाजिक सेवाओं के साथ-साथ एक आध्यात्मिक नवसर्जन के लिये गुणातीतपुरुषों की विरासत अखण्ड रखी है। पशुता से मानवता और मानवता से प्रभुता की ओर जगत प्रयाण कर सकें इसके लिये यह विरासत नित्य प्रवर्तमान है।

स्वामिनारायण भगवान की पांचवीं पीढ़ी में गुरुहरि योगीजी महाराज आयें और उनके सान्निध्य में प.पू. काका ने एक अद्‌भुत संघर्ष किया। उनकी इच्छा थी अपने गुरुवर्य योगीजी महाराज को प्रसन्न करने की और इसके लिये आवश्यक था वीर योद्धा का उत्साह, एमेज़ोन के प्रवाह समान वेग, 'प्रभु बिना और कुछ भी नहीं चाहिए'-ऐसी भावना और तत्परता। इन सबने काकाजी के जीवन में अद्‌भुत कार्य किया।

श्री गुलजारीलालजी नंदा निमित्त बने और काम हो गया पू. काकाजी का। सन् 1952 की बात है। नंदाजी गुजरात के साबरकांठा जिले के चुनाव प्रत्याशी थे। उस चुनाव में नंदाजी की और से अपना सब कार्य छोड़ कर चुनाव प्रचार में भाग लेने की आज्ञा गुरुहरि ने पू. काकाजी को दी। काकाजी का व्यापार तेज वेग से चलता था। प्रत्येक क्षण काकाजी की उपस्थिति अपने व्यापार कार्यालय में अनिवार्य थी। काका का चुनाव लड़ने जाना अर्थात् अपने व्यापार में हानि ! किन्तु काका ने यह सब नहीं सोचा। **वे अपने आप में स्पष्ट थे कि जब स्वामी की आज्ञा हो तब व्यवहार का पूर्णविराम** !! काका के व्यापारी सहयोगी ने सम्पूर्ण अरुचि दिखाई किन्तु काका तो तीन मोटरें, कुछ बहनें और गृहस्थों का समाज ले कर चल पड़े और चुनाव-क्षेत्र में पहुँच गये।

1952 में साबरकांठा की स्थिति वास्तव में दयाजनक थी। रास्ते अच्छे नहीं थे। पंचायत के मकानों में किसी प्रकार की व्यवस्था नहीं थी। टट्टी, गुसलखाने सब तूटे-फूटे थे। इसके अतिरिक्त नंदाजी के सामने लड़ रहे थे ईडर के महाराजा। प्रचण्ड विरोध था। साधन की दृष्टि से राजा के चुनाव-प्रचार के लिये एक सौ पांच मोटरें घूम रही थी और नंदाजी की ओर से केवल चार पांच मोटरें ! चुनाव जीतने की किसी प्रकार की संभावना ही नहीं थी, किन्तु काका आश्वस्त थे क्योंकि वे जानते थे कि गुरुहरि योगीजी महाराज मेरे साथ है।

चुनाव क्षेत्र में विजयी होने के लिये काका ने घोर परिश्रम किया। दिन हो या रात काका लड़ रहे थे, भूख हो या प्यास काका लड़ रहे थे, व्यवस्था हो या अव्यवस्था काका लड़ रहे थे। विरोध या अपमान की परवाह किये बिना, राजा की शक्ति-सामर्थ्य-सम्पन्नता को देखे बिना काका लड़ रहे थे। उद्‌देश्य था नंदा जी का चुनाव लड़ कर अपने गुरु की प्रसन्नता प्राप्त करना। उनकी सम्पूर्ण प्रसन्नता की प्राप्ति के लिये जय-पराजय (फल) के बारे में सोचे बिना अप्रतिम श्रद्धा, असाधारण लगन, और अविराम पुरुषार्थ उन्होंने किया। देश, काल, परिस्थिति के बारे में सोचा ही नहीं क्योंकि उनको गुरुहरि योगीजी महाराज के अनन्याश्रय में असाधारण श्रद्धा थी। और गुरुहरि की कृपा भी हुई ! चुनाव तो जीत गये, साथ-साथ योगीजी महाराज की प्रसन्नता भी प्राप्त कर ली। उस समय योगीजी महाराज अटलादरा में बिराजमान थे। चुनाव जीत कर काकाजी तुरन्त विजय के दिन-ही गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये वहां पहुँच गये। काका को देखते ही गुरुहरि अत्यन्त प्रसन्न हो गये, आलिंगन किया और कहा, ''वाह ! दादुभाई, आप तो ईडरिया गढ़' जीत गये। अब प्रकृति पुरुष तक का प्रचंड गढ़ (किल्ला) भी महाराज जिता देंगे।'' बाद में योगीजी महाराज काका को साक्षात् सिद्धस्थान गोंडल ले गये। वहां काकाजी ने गुरु की आज्ञानुसार एक दिन का व्रत रखा। 'अक्षरदेरी' की पांच सौ प्रदक्षिणा की, स्नान किया, नई धोती पहनी। और अन्त में योगीजी महाराज ने काका को घनश्याम महाराज की भव्य रमणीय मूर्ति के सामने खड़ा कर दिया और

योगीजी महाराज ने सहजानन्दस्वामी की मूर्ति जिन्हें वे साक्षात् स्वरूप समझते थे, उनको पूरे अधिकार के साथ प्रार्थनामय स्वर में विनती की-

''हे घनश्याम महाराज ! यह दादुभाई ने शास्त्रीजी महाराज को अत्यन्त प्रसन्न किया है। हमारी आज्ञा शीघ्र स्वीकृत कर के सफल की है। उनको अक्षरधाम की दिव्य समाधि करा कर प्रत्यक्ष दर्शन दीजिए।''

योगीजी महाराज की यह प्रार्थना की क्षण काकाजी के लिए परम मंगलमय क्षण बन गई और वह क्षण आज हम सबके लिए भी परम सौभाग्य की क्षण है। योगीजी महाराज के मुख से ये शब्द प्रगट होते ही काका ने अनुभव किया कि नायगरा के प्रचंड वेग से कहीं अधिक वेगवान प्रकाश का ऐसा प्रकाशमय तेज प्रवाह प्रारंभ हो गया जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। घनश्याम महाराज की आँखें की पलकें झपकने लगी और इनमें से एक अद्‌भुत दिव्य चेतना का संचार काका के हृदयाकाश में हुआ। एक असाधारण प्रकाश तीव्र गति से इन को भेदने लगा। काका ने बड़ी जोर से चीख मारी। उनको लगा कि मेरे प्राण शरीर से अलग हो रहे हैं। देह काष्ठमय हो गया। योगीजी के मांगल्यप्रद दिव्य स्वरूप ने काका के हृदयाकाश में संपूर्ण प्रवेश किया और अक्षरधाम की दिव्य यात्रा का प्रारंभ हुआ। काका को स्पष्ट अनुभव हुआ कि मेरे प्राण देह से अलग हो गये हैं। जब बालक जन्म लेता है तब नाभि द्वारा अपनी जन्मदात्री के साथ जुड़ा हुआ रहता है तथापि इससे अलग है; ठीक इसी प्रकार काका ने देखा कि मेरे प्राण मेरे देह से मुक्त है, अलग है तथापि एक चांदी के तार जैसी प्रकाश रेसा युक्त भी है। इस प्रकार देह और प्राण का (दोनों शरीरों का) किसी न किसी प्रकार अनुसंधान था। टेलीविजन के फलक पर जिस प्रकार वायुमंडल की तरंगों में प्रकाश और आवाज के रजकण इकट्ठे होकर भिन्न भिन्न आकृतियों के दर्शन कराते हैं ठीक उसी प्रकार काका विविध प्रकार की भूमिकाओं से अग्रसर होने लगे। प्रारंभ में जब प्राण देह से मुक्त हुआ तब काका ने भयंकर चीख मारी यह हम पढ़ चुके हैं। देह से प्राणविमुक्ति की इस क्षण में शीघ्र ही दैहिक वासनाएं, प्रकृति एवं महत्वाकांक्षा की ग्रन्थियाँ पिघलकर नष्ट हो गई हों ऐसा अनुभव काका को हुआ। तुरन्त अक्षरधाम की यात्रा शुरु हो गई और भिन्न-भिन्न भूमिका में विचरण करते गोलोक की भूमिका में प्राण ने प्रवेश किया। वहां का वातावरण काका को बहुत अच्छा लगा। उनको इच्छा हुई की मैं सुख और समृद्धि के ढ़ेर पर बैठा ही रहूँ और शास्त्रीजी महाराज जो विपरीत देशकाल में भगीरथ कार्य कर रहे हैं उनको सहायभूत होने के लिये थोड़ी सोने की ईंटे ले लूं। किन्तु योगीजी महाराज ने जोर से एक धक्का दिया और काका जी को आगे बढ़ाया। इतने में काकाजी को प्रश्न हुआ की महामाया का लोक कैसा होगा? शीघ्र उन्हें छह से दस फीट ऊँचे देहधारी सूक्ष्म नीलरंगी मानव का लोक दिखाई पड़ा। वहां उन्होंने देखा कि प्लास्टिक जैसी रुई के हलके वस्त्रधारी सुन्दर अप्सराएं अपने (पू. काकाजी के) नाखून सफा कर रही है, जूड़ा बांध रही है और सुगंधी इत्तर लगा रही है। वहां सारा वातावरण सुगंध से महक रहा था, आह्लादजनक था और सौंदर्यसभर था। वहां की भूमिका में अप्रतिम Glorious Radiant Beauty थी। यह भूमिका भी काकाजी को बहुत अच्छी लगी किन्तु योगीजी महाराज ने एक और धक्का लगाया और काकाजी को ऊपर उठाया।

अब काकाजी ने महाशून्य की भूमिका में प्रवेश पाया। इनको लगा कि मैं एक सेकेन्ड में अरबों

मील की गति से जा रहा हूँ। योगीजी ने घोर अंधकारमय प्रवेश दिखाया। वहां भी गति असाधारण तीव्र थी। उस समय काकाजी को संकल्प उठा कि माया का स्वरूप कैसा होगा? संकल्प होते ही इन्हीं ने तीन-चार मील लम्बा चौड़ा पशुविष्टा का ढ़ेर देखा। असंख्य कीड़े और जन्तु इसमें उबल रहे थे। इस अत्यंत दुर्गन्ध पूर्ण मलिन वातावरण से परे होने की जब काका जी को इच्छा हुई तब योगीजी महाराज ने एक और धक्का लगाया और काकाजी के प्राण को अग्रसरित किया।

अन्त में जहां अनन्त मुक्तों द्वारा सेवित पुरुषोत्तमनारायण की रसधन मूर्ति सबको सुख प्रदान कर रही है उस दिव्यधाम का अद्‌भुत दर्शन योगीजी महाराज ने काका को करवाया। इस अक्षरधाम में आनन्द का महासागर उभरा हुआ था, वातावरण नीरव और प्रशान्त था और कृत्कृत्यता, धन्यता और पूर्णता की अनुभूति थी। किसी भी प्रकार की वाणी नहीं थी तो भी परावाणी की मधुर ध्वनि सुनाई पड़ती थी।

वहां काकाजी को सहजानंदजी महाराज और योगीजी महाराज का ऐक्य दिखाई पड़ा। पुरुषोत्तम नारायण का यह साक्षात् स्वरूप है ऐसी दृढ़ प्रतीति हुई और काकाजी को असीम आनन्द हुआ। अक्षरधाम के तख्त पर बिराजमान सहजानंद स्वामी और गुरुहरि योगीज महाराज में तनिक भी अन्तर नहीं है ऐसा अलौकिक दर्शन हुआ। शाश्वत सुख, शान्ति और आनन्द में एवं अद्‌भुत चिदाकाश के महासागर में अपना आत्मा उछल रहा हो, ऐसा अनुभव हुआ।

इस अनुभूति के प्रसंग का वर्णन करते हुए काकाजी कहते है :-

''मैं मेरा भूतल पे जो देह था उसको भी देख सकता था और अपने चैतन्यमय स्वरूप को भी देख सकता था, किन्तु उसका यथार्थ वर्णन करना सम्भव नहीं है।''

यहां काका को जब जिस प्रकार का संकल्प होता था इस प्रकार की अलग भूमिका के भिन्न-भिन्न व रूप-स्वरूप दर्शन उसी क्षण होते थे। प्रथम तो काकाजी को ऐसा लगा कि स्वयं एक रक्त, नील बिन्दुवाला ऊपर लटकता हुआ शुभ फोम जैसा प्रकाश बिन्दु है। वह प्रकाश करोड़ों चन्द्र की शांति प्रदान करने में सक्षम है और संपूर्णतया श्वेत है। यह बिन्दु रूप भूमिका के भीतर चिदाकाश में स्थित एक भव्य राजमार्ग पर वे आकाश में विचरण कर रहे थे। चारों और सर्वत्र पुरुषोत्तम रूप महामुक्तों के दर्शन हो रहे थे। अपने संकल्पानुसार मुक्तों के स्वरूप और आकार बदलते रहते थे। पृथ्वी की कोई भाषा वहां नहीं बोल सकते थे, किन्तु विशिष्ट रहस्यमय मूकभाषा में बातचीत सुनाई पड़ती थी।

काका को एक संकल्प उठा, क्या यहां अक्षरधाम में विश्राम करने का होगा या नहीं? शीघ्र ही सायं संध्या का नीलप्रकाश छा गया ! थोड़ी देर के बाद संकल्प उठा, यहां भोजन मिलेगा या नहीं? या यहां सुबह होगी या नहीं? शीघ्र सूर्योदय के पूर्व के ऊषा समय का रक्त प्रकाश सर्वत्र व्याप्त हो गया ! और विचार आया कि यहां अक्षरधाम में मध्याह्न जैसा कुछ होगा या नहीं। तुरन्त तप्तसुवर्ण जैसे अनंत सूर्यो का सुनहरी प्रकाश वहां व्याप्त हो गया ! किन्तु वह प्रकाश मधुर और आह्लादजनक था। स्वयं मानो उस अधोउर्ध्व और सर्वत्र प्रमाण रहित की भूमिका में और विशाल प्रदेश में कागज से भी हल्के होकर उड कर विचरण कर रहे हो ऐसा इन्होंने अनुभव किया।

इस अंतिम भूमिका में प्रवेश अर्थात् अनंतता में प्रवेश था। 'सत्यं-ज्ञानमनन्तं ब्रह्म'-इस वाक्य

की यथार्थ अनुभूति यहीं जैसे सार्थक हुई ! यहां अक्षरधाम में उन्हें ब्रह्ममय तनुधारी, चैतन्यमय प्रकृतिपूर्ण, प्रकाशमान मुक्तों का दर्शन हुआ। इन लिंग व योनी विहीन चैतन्य शरीरधारी मुक्तों में सर्वत्र महाराज का दर्शन हो रहा था। अक्षरधाम के अर्चिमार्ग की इस विशिष्ट यात्रा में स्वयं महाराज और योगीजी महाराज सतत काका के साथ थे और उन्होंने ही सर्व प्रकार से-वृत्ति या प्राण के निरोध से पर ऐसे तत्त्वदर्शन का या अन्वय स्वरूप के रहस्य-दर्शन का साक्षात्कार करवाया था। काका को अपने (1) स्थूल देह, (2) सूक्ष्म शरीर, (3) अज्ञानमय स्वरूप, (4) प्रकाशित स्वरूप और अन्त में (5) ब्रह्ममय-दिव्य-तनु इस प्रकार पांचों स्वरूप का दर्शन हुआ।

योगीजी महाराज ने अत्यंत कृपा करके काकाजी को ब्रह्मस्वरूप का साधर्म्य करवाया। काकाजी के मन, बुद्धि, चित्त, प्राण और अहंकार का दिव्यता में रूपांतर कर दिया। इस विषय में ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज ने अपने बम्बई निवास समय की डायरी में अपने स्वहस्त से ता. 21-6-62 और ता. 22-6-62 में प्रासादिक शब्दों में लिखा भी है।

साक्षात्कार की इस अनुभूति में योगीजी महाराज ने काका को अपने मानव-स्वरूप का सम्यक् दर्शन करवाया और अपने विराट स्वरूप का दिव्य दर्शन करवाया। गुरुहरि की केवल कृपा से ही यह सत्य स्वरूप दर्शन सिद्ध हुआ। ऐसे क्रान्ति कारक दर्शन के बाद बहत्तर घण्टे तक महाराज ने काकाजी को ऐसी भूमिका में रखा। बाद में स्थूल शरीर में पुनः प्रवेश करवाया; किन्तु काकाजी की यह समाधि प्रणालिकागत समाधि नहीं थी। यह तो मूलभूत अज्ञान की निवृत्ति करने वालो, चैतन्य प्रकृति के भागवती तनुयुक्त सत्य और नित्य समाधि थी। अतः काकाजी इस समाधि-अनुभव के समय के बाद भी अखण्ड ज्ञान समाधि में रहे है और अभी भी है।

महाराज के अपरिमित महिमास्वरूप का और योगीजी महाराज के अपार महिमा का यह साक्षात्कार था। काकाजी की सर्ववृत्तियाँ और स्वभाव का यह आमूलचूल रूपांतर था। योगीजी महाराज ने अपने पारस-स्पर्श से काकाजी को पारस बना दिया ! काकाजी का सुवर्ण-पात्र उन्होंने ही बनाया और उन्होंने ही इसमें ब्रह्मरस पूर्णतया भर दिया। अब काका के लिय कुछ जानने का, पहचानने का, समझने का, प्राप्त करने का शेष नहीं रहा। पारमेश्वरी शक्ति के सच्चे धारक बनने के बाद कुछ भी अपूर्ण रहता नहीं है। ऐसे विभूति-पुरुष अन्य की प्रकृति और स्वभाव में भी सहज परिवर्तन कर सकते है। यह तथ्य आज हम देखते हैं और अनुभूत कर सकते हैं।

साक्षात्कार की इस अनुभूति में योगीजी महाराज ने काका को जैसे अबाधित स्वातंत्रता, निर्भयता, निश्चिंतता, निडरता, दिव्यता आदि अनंत कल्याणप्रद गुण भेट में दिये ! एक समर्थ भ्रमरी ने दूसरी ऐसी ही भ्रमरी का निर्माण किया !! साक्षात्कार की अनुभूति की यह भव्य फलश्रुति है। ऐसा वास्तविक स्वरूप-दर्शन ही ब्राह्मीस्थिति-'Divine body, bodiless divine consciousness'- का सत्य और भव्य दर्शन है। इसकी प्रतीति अब सबको हो रही है। बहत्तर घण्टे की इस दिव्य समाधि के पश्चात् काका का जैसे आध्यात्मिक दृष्टि से महामृत्यु हुआ और ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज द्वारा ऐसे परब्रह्म के धारक का, अपने लाड़ले मानसपुत्र का नवजन्म हुआ। योगीजी ने अपनी कल्याणपीढ़ी के उत्तराधिकारी का अपने आप निर्माण किया !

काका की यह समाधि गुणातीत भावना को

मंगलप्रद अवस्था का प्रकटीकरण है, आत्मा में परमात्मा का प्रकटीकरण है, दृष्टा, दृश्य और दर्शन की एकता है, वेद के चार महावाक्य की पूर्णाहुति है।

भगवान स्वयं जिसको अपनी कल्याण योजना के सहभागी बनाना चाहते है इसको चुनते हैं अथवा यूं कह सकते हैं कि भगवान का जो वास्तव में प्रियपात्र होता है उसको अपनी कृपा से ऐसा सम्यक् दर्शन करवाते हैं। इस प्रकार स्वरूप का यथार्थ दर्शन स्वरूप के ही अधीन है। जो सर देने को तत्पर है इसको ही प्राप्ति होती है। छोटे-मोटे के बस की बात नहीं है। अपना जो प्रिय में प्रिय हो उसको प्रभु के लिये और उसकी प्रसन्नता के लिये समर्पित कर देते हैं वह ही प्रभु की प्रसन्नता का पुनित-पात्र बनता है। जो सर्व प्रकार से सतत् प्रभु को ही सब कुछ समझता है वह ही प्रभु को खरीद सकता है। इस प्रकार बिक जाने में प्रभु को भी आनंद आता है। ऐसे भक्त के बिना प्रभु भी एक क्षण नहीं रह सकते हैं। अतः भगवान अपने स्वरूप का ज्ञान उसको करवाता है।

वच. सा. 11 के अनुसार प्रभु का सेवक प्रभु जैसा ही समर्थ बनता है। वच. लोया 10 और 13 के अनुसार वह प्रभु के समान संपूर्ण समत्वधारी होता है। प्रभु के समान ही स्वतंत्र और निर्लेप बनता है। स्वतंत्र रूप से विषय को ग्रहण करता है और स्वतंत्र रूप से विषय का त्याग करता है। ऐसी होती है इसकी सहजावस्था, क्योंकि वह निर्विकल्प रूप से प्रभु के साथ नित्ययुक्त है।

काका बारबार कहते है :-

''मुझे समग्र सत्संग दिव्य लगता है। कहीं किसी के प्रति तिलमात्र अभाव नहीं होता है। स्त्री-पुरुष का भेद तो दिखाई ही नहीं देता। सब मुझे ब्रह्मरूप ही लगते है।''

यह कैसी मस्त अवस्था होगी ! गुरुहरि के द्वारा ऐसा अनुपम साक्षात्कार होने के बाद काका ने उनके (योगीजी के) सत्यस्वरूप का परिचय देने के लिये प्रचंड घोषणा का प्रारंभ किया। समग्र सत्संग समाज को इन्होंने एक ही बात कही:-

''यह जोगीबापा सामान्य साधु नहीं है। यह साक्षात् महाराज का स्वरूप है। शास्त्रीजी महाराज ने सत्संग से विदा नहीं ली है। वे योगी जी के रोम-रोम में अखंड प्रगट है। योगीजी को सर्व प्रकार से पहचान लेना चाहिए। योगीजी को मानसिक रूप से भी झुकाना (लाचार बनाना) यह महापाप है। अक्षरधाम के होते हुए भी इन्होंने ज्ञानगरीबी धारण की है। योगीजी को इच्छानुसार बरतना यह एक बड़ी सेवा है।''

काका ने गांव-गांव, घर-घर घूम के इस प्रकार की घोषणा की और हजारों का योगीजी महाराज के साथ दिव्य सम्बन्ध करवाया।

पू. काका को इस स्वरूप-दर्शन के साक्षात्कार की अनुभूति छब्बीस से अधिक साल पूर्व हुई थी। इसके बाद सत्संग में अनेक ज्वार भाटें आ गये, अनेक प्रकरण उपस्थित हुए और शांत हुए। काकाजी का भयंकर अपमान भी हुआ और अद्‌भुत सम्मान भी हुआ, किन्तु काका की मस्ती वह ही है। शास्त्रीजी महाराज के प्रति और योगीजी महाराज के प्रति वैसी ही पराभक्ति है। समग्र सत्संग समाज के प्रति ऐसा ही निर्दोषभाव है, ऐसी ही विनम्रता है। वास्तव में उनका नशा, उनकी मस्ती या सुखःशान्ति-आनन्द निरंतर वर्धमान है। काकाजी के सम्बन्ध में आने वाले अनेकों के वे मार्गदर्शक रह चुके हैं। समग्र सम्प्रदायों के किसी भी मन्दिर में या स्थान में इतनी धुन, भजन, कथावार्ता और जीव को माया से पर कर के ब्रह्मभाव को जगाने वाले अखाड़े शायद ही होंगे। प.पू. काकाजी ने देश विदेश में स्वामिनारायण के अक्षरपुरुषोत्तम के सनातन

विश्व धर्म को व्यापक स्वरूप में प्रसारित करने के लिये भगीरथ पुरुषार्थ वर्षों से किया है और आज भी कर रहे हैं। उनको जो अद्‌भुत स्वरूप दर्शन का अमूल्य लाभ हुआ है उसको आज उदारता से लुटा रहे है।

सन्तों बनाना, उनकी देखभाल करना, बहनों को भगवान की भक्ति करने की सानूकूलता सर्व प्रकार से देना और युवक-मंडल के विविध लक्षी विकास कार्यक्रम में अविश्रांत पुरुषार्थ करना यह काका के लिये स्वभाविक आनन्द का विषय बन गया है। आज काका के सम्बन्ध में जो कोई आते हैं, वे छोटे हो या बड़े, बालक हो या वृद्ध, स्त्री हो या पुरुष सबको एक प्रतीति सहज भाव से होती है की यह अक्षरधाम के अद्‌भुत विभूति पुरुष है। शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की ओर से इन्होंने जो प्राप्त किया है वह सब सूर्य समान सर्वदेशीय से या अकारण कल्याण करने की 'बसुधैव कुटुंबकम्' की मंगलमय भावना और वात्सल्य से सब को पू.काका बांट देना चाहते है। इनके संपर्क में आने वाले सबको लगता है ''काका मेरे है''। आत्मीयता की यह सहज प्रतीती इन्हीं में होती है। कल्याण दाता महापुरुष का यह ही तो विशिष्ट लक्षण है। इनका संकल्प है कि जो अंगत साधक है वे स्त्री-पुरुष के भेद भाव से, मन, बुद्धि चित्त और अहंकार के प्रदेश से, अस्तित्व या व्यक्तित्व के भाव से पर जो अत्यंत उच्च भूमिका है वहां तक पहुँचे। ऐसे विभूति पुरुष के अंतर का अभिप्राय समझ कर इनका भीतर का भरोसा प्राप्त करना यह आसान बात नहीं है। किन्तु यदि दिल खुल्ला करेंगे, हम इनके बालक है यह भावना से प्रार्थना करेंगे और शंका-कुशंका करना छोड़ देंगे तो सबके लिये उनका भरोसा प्राप्त करना निश्चित संभावित है। हमें पू. काकाजी का स्वरूपदर्शन को सत्य अनुभूतियुक्त योगीजी के अनोखे उत्तराधिकारी रूप में स्वीकार करा है, उनकी दिव्य प्रतिभा का समग्र रूप से स्वीकार करना है,ये जो समझाना चाहते है वह समझना है, हमारे द्वारा ये जो कराना चाहते है वह करना है और हमें जो देना चाहते हैं वह लेना है।

समय बीत रहा है-पानी के प्रवाह के समान, सूर्य-चन्द्र के उदयास्त के समान न किसी के लिये रुका है, न ठहरेगा। समय के विशाल फलक पे अनंत क्षण एक पलक में बीत जायेगी। अतः शीघ्र ही सभान बनना चाहिए। ऐसे करुणा सागर की करुणा का यथार्थ लाभ उठाना चाहिए और आज ही आनंदमय बन जाना चाहिए। हम उनके दिल को आनंद दें, और उनके संकल्प से महाराज को हमारे हृदय में प्रेम से सुस्थिर करें क्योंकि इसमें ही हमारे जीवन का परम और उत्कृष्ट श्रेय समाविष्ट है। गुरुहरि इसके लिये हमें हर प्रकार से बल, बुद्धि, योग और प्रेरणाशक्ति प्रदान करें यह ही है हमारी उनके पुनित चरण में अंतर की प्रार्थना।

卐

ग्राहकों को.....

जिनके शुल्क हमें अभी तक प्राप्त नहीं हुए है और जो दिल्ली से बाहर निवास करते हैं उनकी सुविधा हेतु इस पत्रिका के साथ मनीआर्डर फोर्म भेजे जा रहे है।

कृपया प्राप्त फोर्म द्वारा शुल्क भेजने का कष्ट करें।

—सहसम्पादक

Regd. No. D (D) 655

So Says Pujya Kakaji

- Surrender and dedcication mark the first step and real begining of spiritualism and our love and devotion towards God fructify within a short time for happiness and Eternal Bliss.
- Early morning always glorify & compliment God for His innumerable gifts and blessings and pray intensely for His grace and love and remain cheerful for this day.
- Lord Swaminarayana is dwelling in all hearts and let us do all our actions after remembering Him and His saints and as per His inspiration. Watch, wait and rely fully on God for such action.
- We have reached the destination through **this Divine Saint.** So be always joyful & ever happy & contented.
- Our preception, feeling, thinking, hearing and doing is with ignorant mind and impure heart and hence all the worries, conflicts, fear and chaos. But with real Satsanga the entire table turns for joy, happiness, power and bliss in this life.

Let us do meditation, prayer and satsanga daily.

●

व्रतोत्सवसूची

1. दि.	24.1.79	बुधवार	षट्तिला एकादशी, व्रत; ब्र. स्व. स्वामिश्री योगीजी महाराज का स्वधामगमन
2. दि.	1.2.79	गुरुवार	बसंतपंचमी, श्री शिक्षापत्री जयंती, ब्र. स्व. स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज का प्राकट्यदिन
3. दि.	3.2.79	शनिवार	सदा दिव्य साकारस्वरूप प.पू. काकाजी का स्वरूपानुभूतिदिन
4. दि.	5.2.79	सोमवार	नवमी, श्री स्वामिनारायण जयंती
5. दि.	7.2.79	बुधवार	जया एकादशी, व्रत
6. दि.	23.2.79	शुक्रवार	विजया एकादशी, व्रत
7. दि.	25.2.79	रविवार	श्री महाशिवरात्रि
8. दि.	7.3.79	बुधवार	नवमी, श्री स्वामिनारायण जयंती
9. दि.	9.3.79	शुक्रवार	एकादशी, व्रत
10.दि.	13.3.79	मंगलवार	हुताशनी, पू. भगतजी महाराज का प्राकट्यदिन; चंद्रग्रहण

साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदास जी द्वारा योगी डिवाईन सोसाईटी,
ए-103, अशोक विहार-III, दिल्ली-110052 फोनः 518838
मुद्रण स्थानः **ठक्कर प्रिंटिंग प्रेस**, 2588, बस्ती पंजाबियान, सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007